Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

मेवाड़ में सरोवर निर्माण परम्परा

डॉ. मधुबाला जैन
सीनियर–फेलो,
(आई.सी.एस.एस.आर.)
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर,राजस्थान, भारत।

Article Info
Volume 3, Issue 6
Page Number: 07-11
Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 01 Nov 2020
Published : 20 Nov 2020

ABSTRACT

सारांश– मेवाड़ दक्षिण–राजस्थान का एक ऐसा भूभाग है, जिसका उल्लेख प्राचीनतम साहित्य वैदिक साहित्य से लेकर रामायण, महाभारत, पुराण, ऐतिहासिक काव्य एवं अन्य साहित्यिक स्त्रोतों में उपलब्ध होता है। भले ही उनका नाम भिन्न–भिन्न समय में भिन्न–भिन्न नामों से उपलब्ध होता हो। मेवाड़ क्षेत्र वर्तमान उदयपुर, चित्तौड़, राजसमन्द, भीलवाड़ा जिले एवं उनसे लगते हुए अजमेर, बूंदी, टौंक, डूंगरपुर, बांसवाड़ा के जिलों के कुछ भाग सम्मिलित हैं।

मुख्य शब्द – मेवाड़,राजस्थान, भूभाग, साहित्य, वैदिक, भीलवाड़ा।

मेवाड़ दक्षिण–राजस्थान का एक ऐसा भूभाग है, जिसका उल्लेख प्राचीनतम साहित्य वैदिक साहित्य से लेकर रामायण, महाभारत, पुराण, ऐतिहासिक काव्य एवं अन्य साहित्यिक स्त्रोतों में उपलब्ध होता है। भले ही उनका नाम भिन्न–भिन्न समय में भिन्न–भिन्न नामों से उपलब्ध होता हो। मेवाड़ क्षेत्र वर्तमान उदयपुर, चित्तौड़, राजसमन्द, भीलवाड़ा जिले एवं उनसे लगते हुए अजमेर, बूंदी, टौंक, डूंगरपुर, बांसवाड़ा के जिलों के कुछ भाग सम्मिलित हैं। इस दृष्टि से ऋग्वेद के विश्वामित्र, वशिष्ठ, मधुच्छन्दा, भार्गव राम, महर्षि कण्व के आश्रयदाता व्यवश्व गौतम आदि का साधना क्षेत्र यह प्रदेश रहा तो लंका का अधिपति बनने से पूर्व रावण के आराध्य शिव का क्षेत्र भी (कमलनाथ) यह क्षेत्र माना जाता है।[1] महाभारत में नकुल की दिग्विजय के प्रसंग में माध्यमिका का नाम आता है।[2] यदि चित्रकूटचरितम् के रचयिता पं. गिरधारी लाल व्यास की बात मानी जाए तो चित्रकूट (चित्तौड़) की स्थापना संभवतः चित्रांगद ने की। भीम ने एक सन्यासी की शर्त पर एक रात में इस प्राकार को बनाने की ठानी इस शर्त को पूरा होते

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

देख मुनि ने कुक्कट का रूप धारण कर असमय में बांग दे दी। फलतः भीम को यह किला अधूरा छोड़ना पड़ा।[3] बाद में संभवतः चित्रांगद मौर्य ने या वैसन्तर जातक जयत्तूर ने इस गिरिदुर्ग का निर्माण करवाया। शुड्.गकाल में रचित पाणिनी की अष्टाधायी पर पतंजलि द्वारा रचित महाभाष्य में यवन द्वारा माध्यमिका पर आक्रमण करने का उल्लेख मिलता है, जिसे ऐतिहासिकों ने यवन दैमेत्रय से इसकी तुलना की है।

मेवाड़ में सेतु निर्माण कर सरोवर या कुण्ड बनाने की परम्परा बहुत प्राचीन काल से प्राप्त होती है। इस पत्र में मेवाड़ में सेतु निर्माण परम्परा के साथ सरोवर निर्माण की परम्परा के संकेत हमें प्राप्त होते हैं।

पौराणिक काल की चर्चा करे तो एकलिंग माहात्म्य के अनुसार एकलिंग जी के समीप स्थित इन्द्र–सरोवर का निर्माण इन्द्रदेव ने किया। इसलिए इसे वहां 'इन्द्रबद्धे सरस्के' कहा गया है।[4] इसी प्रकार चित्तौड़ पर शासन करने वाले मौर्य शासकों के काल में मान नामक मौर्य राजा ने तालाब बनाया जो मान–सरोवर के नाम से प्रसिद्ध है। कर्नल जेम्स टॉड ने वहाँ स्थित शिलालेख का हिन्दी रूपान्तर करवाया था। इस शिलालेख को वह जहाज में डालकर इंगलैंड ले गया। रास्ते में जहाज के डगमगाने पर उसे समुद्र में फिकवा दिया गया। उक्त शिलालेख का हिन्दी रूपान्तर कविराजा श्यामल दास जी ने वीरविनोद के प्रथम भाग में प्रकाशित करवाया है।[5]

रणछोड़ भट्ट रचित अमरकाव्यम् में आलू नामक शासक द्वारा नागदा में सरोवर के किनारे शिवमंदिर बनवाने का उल्लेख है।[6] इससे यह अर्थ निकलता है कि नागदा में कमलों से सुशोभित तालाब पहले से विद्यमान था अथवा आलू महारावल ने पहले कमलों से सुशोभित तालाब बनवाया, उसके पश्चात् शिवमंदिर बनवाया। बाप्पा ने घासा ग्राम के समीप बाप्पसर का निर्माण करवाया था।[7]

संवत् 1356 में केलवाड़ा में रहते हुए हम्मीर ने 'हम्मीर–सर का निर्माण करवाया।[8] इसी केलवाड़ा के समीप बाद में महाराणा कुंभा ने कुंभलगढ़ दुर्ग' का निर्माण करवाया। चित्रकूट (चित्तौड़) पर अलाउद्दीन द्वारा आक्रमण के बाद इसकी खिलजी सल्तनत का अंग बना दिया गया। यहाँ पर सोनगिरा शासकों को दुर्गपाल बना दिया। हम्मीर ने सोनगिरा की पुत्री से विवाह संबंध स्थापित कर चित्रकूट हस्तगत कर लिया और उसने चित्रकूट पर शासन करते हुए उसने बारह मंदिर और बाईस तालाबों का निर्माण करवाया।[9] इस प्रकार महाराणा हम्मीर ने इस भूमि को 'नदीमातृक' देश बनाने का प्रयास किया। विभिन्न प्रकार के निर्माण कार्यों में 13 करोड़ रजत–मुद्राओं का व्यय किया।

यह प्रसिद्धि है कि महाराणा लाखा के समय पिछोली के तट पर पिछोला का निर्माण संभवतः किसी बनजारे ने करवाया। महाराणा लाखा के पुत्र मोकल ने ऋणमोचन, पापमोचन तीर्थ और सेतुमण्डन नामक सुन्दरकुण्ड का निमार्ण करवाया।[10] रावत बाघा नामक अपने भाई की मुक्ति के लिए नागदा में निर्मल जल वाले बाघेला नामक तालाब का निर्माण करवाया।[11] मोकल की हत्या के बाद उनका पुत्र कुंभा मेवाड़ का शासक बना। महाराणा कुंभा का काल निर्माण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण काल था। जैसे शाहजहां के शासनकाल को मुगल काल का स्वर्णकाल कहा जाता है उसी प्रकार मेवाड़ में महाराणा कुंभा का काल स्वर्णकाल कहा जाता है। उसने 84 किले तथा अन्य निर्माण करवा कर मेवाड़ को महत्वपूर्ण प्रदेश बना दिया। कुंभा ने कुंभलमेरू दुर्ग में सात तालाब खुदवाये।[12] वर्द्धनपुर में तालाबों का निर्माण करवाया।[13] अपनी पुत्री रमाबाई के नाम से रामकुण्ड या रमाबाई के कुण्ड का निर्माण करवाया।[14]

कुंभा के पुत्र रायमल्ल ने रामा नामक तालाब का विस्तार किया तथा शंकर नामक महान् सरोवर को खुदवाया।[15]महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर बसाने के साथ ही उदयसागर सरोवर का निर्माण करवाया। तड़ाग की प्रतिष्ठा पर उसने छीतूभट्ट तथा उसके सहोदर लक्ष्मीनाथ को भूरवाड़ा नामक गाँव दान में दिया।[16]

महाराणा राजसिंह ने वि.स. 1725 में बड़ी नामक ग्राम में तड़ाग की प्रतिष्ठा करवाई तथा अपनी माता जनादे के नाम से इसका नाम जनासागर रखा। इसके निर्माण में 6 लाख 80 हजार रूपये व्यय हुए। तालाब की प्रतिष्ठा के अवसर पर पुरोहित को चित्तौड़ का गिलूंड तथा थामला का देवपुरा नामक गाँव दिया।[17] जनासागर की प्रतिष्ठा के दिन महाराणा राजसिंह की आज्ञा से राजकुमार जयसिंह ने रंगसर नामक तालाब की प्रतिष्ठा करवाई।[18] महाराणा राजसिंह का सबसे बड़ा योगदान गोमती नदी को बाँधकर कांकरोली के समीप राजसमन्द नामक तालाब का निर्माण है। महाराणा ने भी इस कार्य को इतना महत्त्वपूर्ण माना कि इस घटना को काव्यरूप में वर्णित करवाने के लिए दो कवियों को कार्य किया। महाराणा उदयसिंह के काल से निरन्तर जुड़े हुए तैलंगभट्ट परिवार के रणछोड़ भट्ट ने राजप्रशस्ति नाम से काव्य की रचना की।[19] इसे 25 शिलाओं पर शिलांकित करवा कर राजसमन्द की पाल पर लगवाया गया।[20] इसका प्रयास राजसिंह के मंत्री गरीबदास के संरक्षण में सदाशिव नागर ने राजरत्नाकर नामक काव्य की रचना की।

इन दोनों काव्यों में राजसमन्द झील के निर्माण की प्रक्रिया बड़े विस्तार से दी गई है। राजप्रशस्ति में सर्ग 9 से लेकर संर्ग 11 तक निर्माण की प्रक्रिया दी गई है। सर्ग 12 से लेकर सर्ग 22 तक राजसमुद्र की प्रतिष्ठा का वर्णन है। इसके निर्माण का कारण प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि कुमार पद में राजसिंह जब विवाहार्थ जैसलमेर गया तो उसने धोयन्दा, सनवाड़, सिवाली, भिगावदा, पंसूर, खेड़ी, छापरखेड़ी, तासोल, मंडावर, भाण लुहाणा, बांसोल, गुठली, कांकरोली और मढ़ा गाँव की सीमा में तड़ाग निर्माण योग्य भूमि देखकर जलाशय बनाने का विचार किया। राज्य प्राप्त करने हेतु रूपनारायण के दर्शन हेतु उधर गया तो एक बार वह स्मृति पुनः हो आई और तालाब बनाने का विचार दृढ़ हुआ। इस हेतु दो बड़े पर्वतों के बीच गोमती नदी को रोककर महासेतु बनाने का प्रयास किया गया। पुरोहित गरीबदास ने शिलान्यास किया। इसकी प्रतिष्ठा एवं निर्माण में कुल एक करोड़ इक्यावन लाख, बहत्तर हजार, दो सौ तैंतीस रूपये, 4 आने खर्च हुए।[21] महाराणा राजसिंह ने इसके पश्चात् इसका विधिवत् उत्सर्ग किया जिसमें अनेक महादान किए। इसके साथ ही महाराणा ने पर्वत पर राजमंदिर नामक महल एवं समीप ही राजनगर नामक पुर का निर्माण करवाया।[22] इतना ही नहीं महाराणा राजसिंह ने एकलिंग जी के समीप स्थित इन्द्रसरोवर का जीर्णोद्धार करवाया। महाराणा राजसिंह की रानी जोधपुरी जो राठौड़ रूपसिंह की पुत्री थी उसने महाराणा की आज्ञा से राजनगर में बावड़ी की प्रतिष्ठा की जिसके निर्माण में तीस हजार रूपये व्यय हुए।[23] महाराणा राजसिंह की आज्ञा से उनकी रानी रामरसदे ने देबारी में जया नामक बावड़ी का निर्माण करवाया जिसमें 24,000 रजत–मुद्राओं का व्यय हुआ।[24]

महाराणा राजसिंह के पुत्र महाराज कुमार जयसिंह ने जहाँ कुमारपद में रंगसागर और देवाली का तालाब बनवाया वहीं शासन–सूत्र संभालने के पश्चात् छप्पन क्षेत्र में गोतोड, पाटन, गामडी, शकुरेडिया, भटवाड़ा, नाक, डीगला, मालक, अधवाड़ा आदि 23 गाँवों की भूमि में तालाब बनाने की योजना बनाई। यहाँ भी मणियाल नामक पर्वत के दो नाकों के बीच में गोमती नदी को बाँधने का प्रयास किया गया। सेतु की लम्बाई 50 गज तथा ऊँचाई 51 गज है। तल में चौड़ाई 600 गज, आगे 50 और विस्तार

में 50 गज हैं। इस पर महल, मंदिर और बुर्ज बनवाये गए। इसका वर्णन जयसिंह प्रशस्ति नामक अप्रकाशित काव्य में प्राप्त होता है। यह एशिया की मानव–निर्मित सबसे बड़ी झील मानी जाती है। महाराणा ने इसका नाम जयसमन्द, नगर का नाम जयनगर तथा प्रासाद का नाम जयप्रासाद रखा।[25] फतहसागर का निर्माण करवाया। जो आज भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

इन विशाल सरोवरों के अतिरिक्त मेवाड़ में अनेक बावड़ियों का निर्माण भी हुआ है। महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने बड़ीपाल के पीछे नीलकंठ महादेव के पास बावड़ी का निर्माण करवाया।[26] संग्रामसिंह की माता देवकुमारी ने सीसारमा गाँव में मीठे जल का कुंड बनवाया।[27] जगत्सिंह द्वितीय के शासन काल में हरिवंश शर्मा ने वापी का निर्माण करवाया।[28] महाराणा जगत्सिंह द्वितीय के विजयराज्य में धायभाई मानजित् ने गोवर्धन विलास में कुंड का निर्माण करवाया।[29] महाराणा जगत्सिंह के विश्वासपात्र देवजीत् ने दिल्ली दरवाजे के पास वापी का निर्माण करवाया।[30]

महाराणा अरिसिंह तृतीय की रानी प्रभु बारातण ने बावड़ी का निर्माण किया।[31] महाराणा अरिसिंह तृतीय के शासनकाल में धायभाई रूपजीत् की पत्नी पूराबाई ने सालेड़ा ग्राम में बावड़ी का निर्माण करवाया।[32] महाराणा अरिसिंह के पुत्र महाराणा भीमसिंह के शासन काल में उनकी माता रामप्यारी जो बाइजीराज के नाम से विख्यात थी उसने बाड़ी में बावड़ी का निर्माण करवाया।[33]

इसके पश्चात् महाराणा स्वरूपसिंह ने स्वरूप सागर, गोवर्धन सागर तथा महाराणा फतहसिंह ने देवाली के पास फतहसागर का निर्माण करवाया।

संदर्भ–ग्रन्थ

1. अमरकाव्यम्–रणछोड़ भट्ट संर्ग–10:40–44
2. महाभारतः सभापर्व
3. चित्रकूटचरितम्–गिरधारीलाल शास्त्री
4. एकलिंग माहात्म्य
5. वीरविनोद भाग–1, पृष्ठ 378–380
6. अमरकाव्यम्, सर्ग 4:23
7. वहीं, सर्ग 4:74
8. वहीं, सर्ग 7:52
9. वहीं, 7:77–78
10. वीरविनोद भाग–1,कुम्भलमेरू के मामादेव के मन्दिर की प्रशस्ति श्लोक–223
11. राजप्रशस्ति, सर्ग 4:10
12. वीरविनोद भाग–1, एकलिंग जी में दक्षिणाद्वार के सामने की प्रशस्ति श्लोक–51
13. वहीं, कुम्भलमेरू के मामादेव के मन्दिर की प्रशस्ति श्लोक–257
14. वीरविनोद भाग–2, जावर की प्रशस्ति
15. वीरविनोद भाग–1, एकलिंग जी में दक्षिणाद्वार के सामने की प्रशस्ति, श्लोक–74,75
16. राजप्रशस्ति, सर्ग 4:18,19
17. वहीं, सर्ग 8:47–49

18. वहीं, सर्ग 8:41, 42
19. राजप्रशस्ति, प्रत्येक सर्ग का अन्तिम श्लोक
20. वहीं, सर्ग 8:53
21. वहीं, भूमिका–पृष्ठ 35
22. वहीं, सर्ग 18:16
23. वहीं, सर्ग 24:11,12
24. वीर विनोद भाग–2, त्रिमुखी बावड़ी की प्रशस्ति–श्लोक–58,60
25. जयसिंह प्रशस्ति
26. वीर विनोद भाग–2, बड़ी पाल के पीछे दक्षिणामूर्ति में महादेव के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक–8
27. वीर विनोद भाग–2, सीसारमा गांव के वैद्यनाथ मंदिर की प्रशस्ति का चौथा प्रकरण, श्लोक–29
28. वीर विनोद भाग–2, हरबेनजी के खुरे पर शिवालय की प्रशस्ति, श्लोक–25
29. वहीं, गोवर्धन विलास में मानजी, धायभाई के कुंड की प्रशस्ति, श्लोक–10
30. वहीं, दिल्ली दरवाजे के पास बाईजीराज के कुंड के दरवाजे के सामने पंचोलियों के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक–28
31. वहीं, प्रभु बारातण की बाड़ी के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक–11
32. वहीं, मेवाड़ के सालेड़ा ग्राम में पूर्व दिशा वाली बावड़ी पर महादेव मन्दिर की प्रशस्ति
33. वहीं, उदयपुर के रामप्यारी की बाड़ी के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक–13